

# डॉ. गैरी मीडर्स, 1 कुरिन्थियों, व्याख्यान 7, 1 कुरिन्थियों का परिचय, भाग 2

© 2024 गैरी मीडर्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी मीडर्स द्वारा 1 कुरिन्थियों की पुस्तक पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह व्याख्यान 7 है, 1 कुरिन्थियों का परिचय, भाग 2।

खैर, चलिए व्याख्यान संख्या 7 से आगे बढ़ते हैं। हम नोट्स के पेज 22 पर हैं। हम कुरिन्थ शहर और कुरिन्थ के सांस्कृतिक पहलुओं के बारे में बात कर रहे हैं।

हम बस वह बनाने की कोशिश कर रहे हैं जिसे हम चेतना कहेंगे। जब आप कोरिंथियन की पुस्तक पढ़ते हैं, तो यदि आप कर सकते हैं, तो आप जो सबसे अच्छा कर सकते हैं वह यह है कि आप उस तरह की दुनिया की चेतना के साथ वहां जाएं जिसमें कोरिंथियन काम करते थे और पॉल काम करते थे ताकि जब आप कोरिंथ सुनते हैं, तो आप कोरिंथियन बोलते हुए सुनते हैं, तो आप महसूस कर सकते हैं कि आप एक तरह से वहां मौजूद हैं। और जब हम रोमन विरासत के मुख्य अंशों को समाप्त कर रहे थे, तो हमने बात की, कि सामाजिक संबंध व्यक्तिवाद से बहुत बंधे हुए थे, एक शक्ति जो स्थिति से उत्पन्न होती थी, एक ईसाई दृष्टिकोण से यौन शोषण, विशेष रूप से स्थिति के आधार पर, धांधली वाली अदालतें, और हम और भी बहुत कुछ कह सकते हैं।

अब, मैं इस परिचय को गारलैंड से बहुत ज़्यादा जोड़ रहा हूँ क्योंकि मैं चाहता हूँ कि आपकी जानकारी के लिए सिर्फ मेरे बजाय कोई प्रकाशित स्रोत हो। मुझे लगता है कि यह एक बहुत ही पठनीय टिप्पणी है, और इसलिए, मैं चाहता हूँ कि आप किसी प्रकाशित स्रोत से जुड़ें क्योंकि उसमें ज़्यादा अधिकार होता है, और फिर आप दूसरे स्रोतों को भी देख सकते हैं। मैं बस इसे उजागर करने की कोशिश कर रहा हूँ।

आइए अब 22 के निचले भाग में धार्मिक संदर्भ के साथ आगे बढ़ते हैं। तो, आपको सामाजिक संदर्भ मिल गया। यहाँ धार्मिक संदर्भ है। अधिकांश ग्रीको-रोमन शहरों की तरह, कोरिंथ भी मूल रूप से बहुदेववादी था।

सभी विशिष्ट देवता वहाँ मौजूद थे, जिनमें शाही पंथ के रूप में जाना जाने वाला पंथ भी शामिल था, जो सिंहासन और वेदी का गठबंधन था जहाँ सीज़र भगवान के रूप में बोलता था, जैसा आप चाहें। अब, बहुत सारे अध्ययन हैं, इन रोमन सम्राटों ने खुद को कैसे देखा, इसके बारे में बहुत सारे मुद्दे शामिल हैं, और इसकी विविधता को और अधिक विस्तार से खोलना होगा। फिर भी, रोमन सम्राट बहुत हद तक देवताओं की तरह काम करते थे, और उनमें से कुछ तो खुद को ऐसा ही मानते थे।

आज शाही पंथ के बारे में बहुत कुछ लिखा जा चुका है। उस पर आगे की जानकारी पाना आपके लिए बहुत मुश्किल नहीं होगा। मुझे गारलैंड का यह तरीका पसंद आया: धार्मिक संदर्भ धार्मिक प्रथाओं की एक कैफेटेरिया लाइन की तरह था।

क्या आप कभी किसी कैफ़ेटेरिया में जाते हैं? शायद आपने कभी इसका अनुभव न किया हो, लेकिन यू.एस. और खास तौर पर दक्षिण में, वे बहुत लोकप्रिय कैफ़ेटेरिया हुआ करते थे। आप अंदर जाते, आपको एक ट्रे मिलती, और आप उसमें से अपनी पसंद का खाना चुनते। आपको इस बारे में थोड़ा सोचना पड़ता था क्योंकि वहाँ खाने की बहुत बड़ी लाइन लगी होती थी, और वहाँ बहुत से लोग होते थे जो आपको यह और वह देते थे।

मुझे याद है कि एक बार मैं अपनी सास को उत्तरी कैरोलिना के विस्टन-सलेम में K&W कैफ़ेटेरिया में ले गया था। वह कभी कैफ़ेटेरिया में नहीं गई थी। वह पूर्वी कैरोलिना के दूरदराज के इलाकों में पली-बढ़ी थी और बहुत ज़्यादा बाहर नहीं जाती थी।

खैर, वह K&W में चली गई, और हम लाइन में लग गए, और मैं बहुत ज़्यादा ध्यान नहीं दे रहा था क्योंकि मैं कैफ़ेटेरिया में रहने का आदी था। फिर मैंने पलटकर उसकी ट्रे को देखा। वह भरी हुई थी।

उसने सोचा कि उसे हर चीज़ में से कुछ न कुछ मिलना चाहिए। खैर, ऐसा करना असंभव भी था, इसके अलावा मुझे कितना खर्च करना पड़ता, आप जानते हैं, जब हम लाइन के अंत में पहुँचते। खैर, प्राचीन ग्रीको-रोमन दुनिया में धर्म एक कैफ़ेटेरिया लाइन की तरह था।

बस आप चुनिए कि आप किसे और क्या चाहते हैं। यह प्राचीन देवताओं और पूजा के प्राचीन तरीकों की प्रचुर आपूर्ति थी। जितने ज़्यादा देवताओं को आप खुश कर सकते थे और एक तरफ़ रख सकते थे, उतना ही बेहतर था।

आप अज्ञात देवता को एथेनियन संदर्भ के बाहर भी देख सकते हैं। वे किसी ऐसे देवता को अपमानित नहीं करना चाहते थे जिसके बारे में उन्हें पता भी नहीं था। बहुत अलग होने के बावजूद, कोरिंथ और एथेंस प्रतिद्वंद्वी शहर थे।

बहुलवादी संस्कृति के कारण, रोम धार्मिक गतिविधियों पर तब तक नियंत्रण नहीं रखता था जब तक कि वह समस्याएँ पैदा न कर रही हो। यह दिलचस्प है, है न? रोम धार्मिक गतिविधियों पर नियंत्रण नहीं रखता था। यह एक बहुदेववादी संस्कृति थी।

उन्होंने इसे तब तक जाने दिया जब तक कि धार्मिक गतिविधि रोमन शासन के लिए समस्या नहीं थी। आह, ठीक है, कुछ मायनों में, ईसाई धर्म रोमन शासन के पक्ष में एक कांटा बन गया। वास्तव में, यहूदी रोमन शासन के पक्ष में कांटा थे, इससे बहुत पहले कि मसीह प्रकट भी हुआ था।

अगर हम सुसमाचार और फिलिस्तीन के इतिहास का अध्ययन करें, तो पिलातुस के वहाँ होने का एक कारण यह था कि यहूदी यहूदिया में रोम के लिए इतने कांटे की तरह थे कि उन्हें हेरोदेस के पूर्वजों में से एक, हेरोदेस, महान के पूर्वज को बाहर निकालना पड़ा और पिलातुस को लाना पड़ा ताकि वह उस शहर का प्रबंधन कर सके क्योंकि यहूदी उस संबंध में कुछ हद तक असहनीय थे। खैर, रोम ने तब तक इस पर पुलिस नहीं लगाई जब तक कि यह कोई समस्या न हो। प्रेरितों के काम 17 पढ़ें।

धर्म की बहुलवादी प्रकृति के इस प्रथम-शताब्दी के संदर्भ को समझने के लिए रोमियों 1:18 से 32 तक पढ़ें। ब्रूस विंटर ने सीक द वेलफेयर ऑफ द सिटी नामक एक पुस्तक लिखी है, और यह एक ऐसी पुस्तक है जो रोमन शहरों को खोलती है और यह बताती है कि रोम का अपने संसार से निपटने का दृष्टिकोण शहर को जीवन का केंद्र बनाना था, और सभी नागरिकों को इसके कल्याण की तलाश करनी थी। खैर, यह वास्तव में बहुत अच्छा है, और यह रोमन साम्राज्य में बहुत अच्छी तरह से काम करता था।

शहर की भलाई का एक हिस्सा धर्म के बारे में चर्चा न करना था। खुश रहो। सभी देवता एक ही स्थान पर जाते हैं।

अपने ईश्वर की पूजा करो। किसी और के ईश्वर की आलोचना मत करो। धार्मिक रूप से रहो।

यह वह दुनिया है जिसमें ईसाई धर्म आया, जिसमें यहूदी राष्ट्र पहले से ही रह रहा था। अब, यहूदी और ईसाई धर्म एक दूसरे से अलग हैं। यीशु ने कहा, मैं ही मार्ग, सत्य और जीवन हूँ।

कोई भी व्यक्ति मेरे बिना पिता के पास नहीं आ सकता। यह बहुत ही अपवादवादी है। यह समावेशी नहीं है, बल्कि अनन्य है।

यह रोमन साम्राज्य के सामाजिक और धार्मिक मानदंडों के विपरीत था। यह हमारे कई देशों में वर्तमान संस्कृति के कई मानदंडों के विपरीत है, जैसा कि हम अपनी दुनिया को विकसित होते हुए देखते हैं। ईसाई धर्म की बहिष्कारवादिता उस संस्कृति में अच्छी तरह से नहीं चली क्योंकि ईसाई धर्म बहुदेववाद को बढ़ावा नहीं देता था।

रोमन लोग भी उन्हें नास्तिक मानते थे। आप भगवान में विश्वास नहीं करते। आप नास्तिक ही होंगे।

अब, क्या यह अजीब नहीं है? लेकिन आपको खुद को उनके स्थान पर, उनके समय और स्थान पर, उनकी संस्कृति में वापस रखना होगा। आप ईसाई होना और नास्तिक कहलाना कैसे पसंद करेंगे? एक बहुदेववादी संस्कृति में, ऐसा शहर के जोर के कारण हुआ। शहर की भलाई के लिए शहर को बहुदेववादी त्योहारों में ढाला गया था।

इसलिए, यदि आप एक व्यापारी हैं, और शहर की भलाई के लिए कोई उत्सव होने वाला है, तो आपसे उस उत्सव को निधि देने की अपेक्षा की जाएगी। लेकिन क्या होगा यदि आप एक ईसाई व्यापारी हैं, और वह उत्सव बहुदेववाद के महिमामंडन पर केंद्रित है? आप इसे कैसे संभालेंगे? ईसाइयों को अपवित्र माना जाता था, क्योंकि वे धार्मिक नहीं थे। बहुदेववादी दृष्टिकोण से शहर की भलाई में उनकी गैर-भागीदारी के कारण वे मानव जाति से घृणा करते थे।

अब, यह कुछ ऐसा नहीं है जिसे हममें से बहुतों ने अनुभव किया हो। हम इसे भविष्य में अपनी कुछ संस्कृतियों के संदर्भ में देख सकते हैं। लेकिन हममें से ज्यादातर, कम से कम मैं, काफ़ी

स्वतंत्र स्थिति में बड़ा हुआ हूँ, यहाँ तक कि मसीह का प्रचार करने में सक्षम होने के बावजूद हमें किसी नकारात्मक तरीके से नागरिक रूप से जवाबदेह नहीं ठहराया गया।

बहिष्कारवादी होना कुछ ऐसा हो गया है जो स्वीकार्य नहीं है - कुछ मायनों में यह पहली सदी जैसा होता जा रहा है।

पेज 23 पर पॉल की घोषणा, वहाँ तीसरा बुलेट पॉइंट, पॉल की घोषणा कि केवल यीशु ही प्रभु है, ने सीधे शाही पंथ को चुनौती दी। इसलिए, अपने अध्ययन में, कुछ किताबें देखें। यदि आपके पास ऐसी स्थिति में होने का विशेषाधिकार है जहाँ आप पुस्तकालयों तक पहुँच सकते हैं या जहाँ आपके पास कोई पुस्तक मंगवाने का साधन है, तो रोम के शाही पंथ पर कुछ सामान्य खंड देखें और इसके बारे में कुछ बातें जानें।

तो, शहर। शहर बहुत बहुसांस्कृतिक और बहु-धार्मिक था, और अगर हम 1 कुरिन्थियों की पुस्तक को महसूस करने में सक्षम होने जा रहे हैं तो हमें इसके साथ संपर्क करना होगा। इसके अलावा, प्राचीन कुरिन्थ की छवियाँ।

अब, पेज 23 से 28 पर, आपको प्राचीन कुरिन्थ के बारे में विस्तृत विवरण मिलेगा। आप स्लाइड में भी इन संदर्भों को देखेंगे। अब, जब आप इसे सुनेंगे, तो आप बाइबिल ई-लर्निंग वेबसाइट के संदर्भ में होंगे।

उस समय तक, आप इन स्लाइडों को संचालित करने में सक्षम हो जाएँगे या इसके बारे में किसी तरह की व्याख्या कर पाएँगे। कक्षा में, मेरे पास ये स्लाइडें हैं, और मैं उन्हें उस साइट पर पहुँचाऊँगा जब तक हमें लाइसेंसिंग वगैरह द्वारा ऐसा करने की अनुमति है। लेकिन आपको वहाँ जाकर इन वस्तुओं को देखने में सक्षम होना चाहिए।

और फिर, मैंने आपको स्लाइड के साथ दिए गए स्पष्टीकरण दिए हैं। आप पृष्ठ 28 पर देखेंगे कि स्लाइड और स्पष्टीकरण हैं। आप इनमें से कुछ चीजों को अपने आप भी सामने ला सकते हैं, लेकिन आपको यहीं जाना है।

मैं इन पर चर्चा करके आपको इन्हें दोहराने नहीं जा रहा हूँ, लेकिन ये आपके लिए यहाँ हैं। जब आप अपने नोट्स में पेज 28 पर आँ, तो कृपया ध्यान दें - प्राथमिक स्रोतों से साहित्यिक पाठ।

तो, मेरे पास स्लाइड्स पर यह खंड है जहाँ आप कोरिंथ की तस्वीरें देख सकते हैं। शुरुआत में सिकंदर महान के बारे में एक प्रस्तुति भी है, मुझे उम्मीद है कि आप इसे देख पाएँगे जब तक हमें इस तरह की चीजें करने की अनुमति मिलती है,

मैं इसे कक्षा में इस्तेमाल कर सकता था जहाँ लोग इकट्ठे होते थे, लेकिन जब यह इंटरनेट पर जाता है, तो यह एक अलग मुद्दा हो सकता है। लेकिन पृष्ठ 28 पर, आपको प्राथमिक स्रोतों से साहित्यिक पाठ दिखाई देगा। यहाँ, मैं आपको कुछ उद्धरण दे रहा हूँ, उदाहरण के लिए, स्ट्रैबो से, जो एक प्राचीन टूर गाइड था। यदि आप चाहें, तो बस एक आधुनिक सादृश्य का उपयोग करें।

ईसा पूर्व पहली शताब्दी के अंत से लेकर पहली शताब्दी के आरंभ तक, उन्होंने कई प्राचीन शहरों के बारे में लिखा। तो, आप कुछ ऐसा पढ़ रहे हैं जो शास्त्रीय और पॉल के बीच का है। दरअसल, चूंकि यह ईसा पूर्व पहली शताब्दी का अंत है, इसलिए इसे पुनर्निर्मित शहर होना चाहिए।

तो, स्ट्रैबो आपको जानकारी देने जा रहा है। और मैंने यहाँ उसे उद्धृत किया है। मैं आपको कई चीज़ों के बारे में उद्धरण दे रहा हूँ जिन्हें आप पढ़ सकेंगे और उनसे जुड़ सकेंगे।

यह पृष्ठ 28 से लेकर पृष्ठ 38 तक है। मैं आज अच्छी प्रगति कर रहा हूँ, है न? पृष्ठों के संदर्भ में। मैंने आपको ये सब विस्तार से बताने के लिए लिखा है ताकि आप इन्हें पढ़ सकें।

आपको उन्हें खुद खोजने की कोशिश नहीं करनी पड़ेगी, बल्कि आपको उस समय अवधि से एक प्राथमिक स्रोत मिलेगा। ताकि आप कोरिंथ के बारे में सुन सकें, पढ़ सकें और देख सकें। पृष्ठ 38 पर, हम इस छवि अनुभाग के अंत में आते हैं, स्लाइड्स के संदर्भ में और ऐतिहासिक स्रोतों के संदर्भ में जिन्हें आपके पढ़ने के लिए मुद्रित किया गया है।

तो, कृपया उन पर ध्यान दें। और मुझे आशा है कि आप इस बात की सराहना करेंगे कि हमने इसे आपके लिए सुविधाजनक बनाने का प्रयास किया है। आपके नोट्स के पेज 38 पर, आप नीचे आएंगे जहाँ लिखा है कि छवियों का अनुभाग समाप्त हो गया है।

और आप बिंदु C, कुरिन्थ, पर आएँगे, जो कि पॉलिन इतिहास से संबंधित है। ठीक है। यहाँ कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण सामग्री दी गई है जो प्राथमिक बाइबल अध्ययन सामग्री है।

सबसे पहले, कोरिंथियन चर्च की स्थापना। खैर, व्याख्यान के इस बिंदु पर, आप रुककर प्रेरितों के काम अध्याय 18 को पढ़ना चाहेंगे। प्रेरितों के काम अध्याय 18, जो लगभग 49 से 51 ई.पू. या ई.पू. के बीच घटित होता है, उस दो से तीन साल की अवधि में, हमें कोरिंथियन चर्च की स्थापना मिलती है।

पॉल ने अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान कोरिंथियन चर्च की स्थापना की। फिर से, मैं आपको कुछ नोट्स देने जा रहा हूँ जिससे आपको पॉल की पहली, दूसरी और तीसरी मिशनरी यात्राओं के बारे में जानने में सुविधा होगी। आप इसे स्रोतों से खोज सकते हैं, लेकिन कभी-कभी इसमें थोड़ा समय लगता है।

और मैं आपको नोट्स में यह जानकारी दूंगा। आप आगे देख सकते हैं और देख सकते हैं। तो, यह तब स्थापित हुआ था।

हालाँकि, शहर और कुरिन्थ के लोगों के साथ पॉल के रिश्ते का कालानुक्रमिक प्रवाह उससे कहीं ज़्यादा जटिल है। मैंने आपको इसका पुनर्निर्माण दिया है। मैंने उस पुनर्निर्माण को राल्फ मार्टिन के दो खंडों से लिया है जो न्यू टेस्टामेंट की नींव पर आधारित हैं।

यह पृष्ठ 39 पर उस पुनर्निर्माण का एक बहुत ही सुविधाजनक प्रकार का विवरण है। और मैं बस इसमें से कुछ को उजागर करने जा रहा हूँ। आपको इसके बारे में सोचना होगा और इसे पढ़ना होगा।

इसके लिए बात करना सबसे अच्छा तरीका नहीं है, लेकिन आप रुककर विचार कर सकते हैं। लेकिन मैं जो कर रहा हूँ वह आपको संदर्भ दे रहा हूँ। मैं आपको कुरिन्थ के साथ पॉल के रिश्ते के बारे में कुछ ऐतिहासिक संदर्भ दे रहा हूँ।

आइए इसे पृष्ठ 39 पर देखें। प्रेरितों के काम अध्याय 18 में चर्च की स्थापना का उल्लेख है, बिंदु एक। बिंदु दो, अध्याय 18 में पौलुस कुरिन्थ छोड़कर इफिसुस भी जाता है।

और वैसे, उन्होंने कुछ समय इफिसुस में शिक्षा देते हुए बिताया, लोगों को सुनने के लिए अपने पास बुलाया। इस दौरान उन्होंने कुरिन्थियों को एक पत्र भेजा। और वह पत्र वास्तव में 1 कुरिन्थियों का पत्र है।

दरअसल, बाइबल के पाठ में पौलुस द्वारा लिखे गए चार बार के कुछ साक्ष्य मौजूद हैं। इनमें से कुछ हमें 1 और 2 कुरिन्थियों में मिलते हैं। कुछ नहीं।

लेकिन विद्वान तर्क देंगे, खास तौर पर 2 कुरिन्थियों के संबंध में, कि कुरिन्थियों को लिखे गए पॉल के लिखित संचार के बचे हुए अंश दूसरे कुरिन्थियों के पाठ में बचे हुए हैं और उस पाठ में शामिल किए गए हैं। तो वैसे भी, बिंदु संख्या तीन में, वह कुरिन्थियों को एक पत्र भेजता है, और हम इसे वास्तविक पहला कुरिन्थियों कहेंगे। वह 1 कुरिन्थियों 5:9 में इसका उल्लेख करता है। यदि आप 1 कुरिन्थियों 5:9 को सुनेंगे, तो मैं उसे यहाँ लाऊँगा और आपको पढ़कर सुनाऊँगा।

मैंने आपको अपने पत्र में लिखा था कि यौन अनैतिक लोगों के साथ संगति न करें। लेकिन उन्होंने इसे गलत तरीके से लिया, और हम इस बारे में बाद में बात करेंगे। इसलिए, जबकि वह 1 कुरिन्थियों के रूप में जो कुछ भी लिख रहा है, वह एक अन्य दस्तावेज़ का उल्लेख कर रहा है जिसे उसने पहले ही लिखा था और उन्हें भेजा था।

हमारे पास वह नहीं है जब तक कि हमारे पास उसके अंश न हों जिन्हें पौलुस ने स्वयं इन पुस्तकों में शामिल किया है। इसलिए, इसे वास्तविक 1 कुरिन्थियों 5:9 में संदर्भित खोई हुई पत्री कहा गया है। कुछ विद्वानों का मानना है कि 2 कुरिन्थियों 6:14-7:1 में उस खोई हुई पत्री के अंश हो सकते हैं।

खैर, यह एक अलग विषय है। बुलेट पॉइंट नंबर चार। पॉल को पता चलता है कि जब उसने उन्हें पत्र लिखा था, तो उसे क्लो के घर के सदस्यों से पता चला।

अब क्लोए का उल्लेख 1 कुरिन्थियों 1:11 में किया गया है। आपको याद होगा कि आरंभिक चर्च संरक्षकों के घरों में मिलते थे। उनके पास इमारतें नहीं थीं, उनके पास चर्च नहीं थे, जैसा कि हम आज सोचते हैं। और 1:11, श्लोक 10 में, मैं आपसे, भाइयों और बहनों, हमारे प्रभु यीशु मसीह के

नाम पर अपील करता हूँ कि आप सभी एक दूसरे से सहमत हों और आप में कोई मतभेद न हो, बल्कि आप मन और विचार में पूरी तरह से एक हों।

वैसे, मैं आमतौर पर 2011 एनआईवी से पढ़ता हूँ, सिर्फ सुविधा के लिए - श्लोक 11। मेरे भाइयों और बहनों, और पुराने संस्करणों में, यह भाइयों कहा जाएगा।

वैसे, इसमें हमेशा बहनें भी शामिल होती थीं। मेरे भाई-बहन, कुछ क्लोए के घर से। अब क्लोए एक स्त्रीलिंग शब्द है।

तो, यह एक महिला संरक्षक रही होगी, जहाँ लोग इकट्ठा होकर पूजा करते थे, पॉल द्वारा लिखे गए पत्रों को सुनते थे, और ईसाई होने का क्या मतलब है, इस बारे में बात करते थे। इन शुरुआती शताब्दियों में चर्च घरों और विभिन्न स्थानों पर मिलते थे, और आमतौर पर कुछ ऐसे व्यक्ति होते थे जिनके पास अधिक साधन होते थे जो उन बैठकों के अवसर का समर्थन करते थे। इसलिए, क्लोए के घर के सदस्यों ने पॉल को बताया कि चर्च गुटों में विभाजित हो गया है।

तो, यहाँ पॉल दूर से जानकारी प्राप्त कर रहा है। पाँचवाँ

नंबर। लगभग उसी समय, पॉल को कुरिन्थियों से एक पत्र मिला जिसमें कुछ मुद्दों पर उसकी सलाह और मार्गदर्शन मांगा गया था।

खैर, यह बहुत बढ़िया बात है। हो सकता है कि वे पॉल को चुनौती पत्र लिख रहे हों। उस पत्र का उल्लेख 7:1 में किया गया है। मैं इसके बारे में बाद में थोड़ा और बात करूँगा।

7:1 कहता है, अब उन मामलों के लिए जिनके बारे में आपने लिखा है। और फिर वह यह उद्धरण देता है। आप NIV जैसे संस्करण में देखेंगे, जो एक अच्छी बात है। उन्होंने इसे उद्धरण में रखा है।

यह कुछ ऐसा है जो उन्होंने कहा। पॉल उन्हें उद्धृत कर रहे हैं, और फिर वह जवाब देने जा रहे हैं। और हम इस पर बाद में बात करेंगे।

इसे नारा कहते हैं। अब उन मामलों के बारे में जिनके बारे में आपने लिखा है। तो, उन्होंने पॉल को लिखा।

यह एक चुनौती पत्र हो सकता था। यह अच्छा हो सकता था, स्पष्टीकरण के लिए पूछ सकता था। लेकिन मैं शायद इस राय से थोड़ा ज़्यादा सहमत हूँ कि वे पॉल की कुछ सोच को चुनौती दे रहे थे।

उसी समय, उन्होंने उससे बातचीत करने के लिए कहा।

छठा नंबर। पौलुस ने इस गुटबाजी का जवाब दिया और सलाह के लिए उनके अनुरोध का उत्तर पत्र लिखकर दिया जिसे हम 1 कुरिन्थियों के नाम से जानते हैं।

तो, हम देखेंगे कि 7 से 16 तक पौलुस ने उन कई सवालों का जवाब दिया है जो कुरिन्थियों ने पौलुस को भेजे थे। यही कारण है कि 1 कुरिन्थियों की संरचना इतनी आसान है; इसमें एक के बाद एक विषय हैं जिनसे पौलुस निपट रहा है। मुझे खुशी है कि उन्होंने उसे लिखा।

लेकिन आप देखिए, 1 कुरिन्थियों ही असल में 2 कुरिन्थियों का पत्र है। यह दूसरी बार है जब उन्होंने उन्हें पत्र लिखा और उनके सवालों का जवाब दिया। इसलिए, हमारा प्रामाणिक 1 कुरिन्थियों पहली बार नहीं है जब उन्होंने लिखा।

यह दूसरी बार है जब उन्होंने लिखा कि यह कैनन में 1 कुरिन्थियों है। 2 कुरिन्थियों 12.18 के अनुसार, यह पत्र टाइटस द्वारा लिया गया है, जो बाद में इफिसुस लौटता है जहाँ पॉल है। तो आप देखते हैं, पॉल के पास यह दल था।

तीमुथियुस और तीतुस भी उस दल का हिस्सा थे। और अन्य लोग भी थे। उदाहरण के लिए, अगर आप कुलुस्सियों की पुस्तक में जाएँ तो इपफ्रास।

और उसके शिष्य थे, अगर आप कहें तो उसके शिष्य। शिष्य शब्द का यही अर्थ है। वे उसके शिष्य थे।

और उन्हें अलग-अलग जगहों पर भेजा जा रहा था। वे इधर-उधर भाग रहे थे और पत्र ला रहे थे और पत्र ले रहे थे। और यह एक बहुत ही अस्थिर स्थिति थी जिसे पॉल संभाल रहा था।

वैसे, प्रेरित यूहन्ना ने भी यही किया था। अगर आप 1, 2 और 3 यूहन्ना को पढ़ेंगे, तो आप देखेंगे कि वहाँ भी ऐसा ही हुआ था। सातवाँ, तीमुथियुस को एक विशेष मिशन पर कुरिन्थ भेजा गया था।

इसका उल्लेख 1 कुरिन्थियों 4 और 16 में किया गया है। इस बीच, यह सब चल रहा है। उनके पास ईमेल, ट्विटर या कुछ और नहीं था।

और हर चीज़ को आगे-पीछे और संदेशवाहकों के ज़रिए भेजा जाना था। सातवाँ, तीमुथियुस को इस खास मिशन पर कुरिन्थ भेजा गया था। आठवाँ, इस बीच, कुरिन्थ में एक गंभीर संकट छिड़ जाता है, जो यहूदी दूतों के आने से और भी बढ़ जाता है।

2 कुरिन्थियों के अनुसार पौलुस के अधिकार को चुनौती दी गई है। तीमुथियुस स्पष्ट रूप से इससे निपटने में असमर्थ है। वह इस समाचार के साथ इफिसुस लौटता है, जहाँ पौलुस था।

देखिए, पौलुस इफिसुस में करीब दो साल तक रहा। और ये बातें आगे-पीछे होती रहीं। इसलिए यहाँ तीमुथियुस आता है।

अरे यार, हमारे सामने एक समस्या है। अब, किंग जेम्स वर्शन में इन यहूदी दूतों को यहूदीवादी कहा जाएगा। अब, मैं विषय से भटकने वाला नहीं हूँ क्योंकि हम यहूदीवादी कौन थे, इस पर पूरा पाठ ले सकते हैं।

लेकिन मैं इसे इस तरह से कहना चाहता हूँ। यहूदीकरण करने वाले संभवतः यहूदी ईसाई थे जो यहूदी धर्म की मजबूत उपस्थिति के लिए संघर्ष कर रहे थे। मैं खुद को उस शब्द का उपयोग करने से सावधान करता हूँ क्योंकि यहूदी धर्म अंततः फरीसियों की विकासशील शिक्षा के लिए शब्द बन जाता है।

लेकिन वे यहूदी-ईसाई शिक्षा के प्रसार में अधिक यहूदी प्रभाव चाहते थे जो पॉल अन्यजातियों के लिए प्रेरित के रूप में कर रहा था। इसलिए, कुछ मायनों में, वे पॉल के लिए काँटे की तरह थे क्योंकि वे पॉल को पीछे खींचने और पॉल को यहूदी सोच में और अधिक केंद्रीय बनाने की कोशिश कर रहे थे। जहाँ पॉल पूरी तरह से यहूदी था और निश्चित रूप से यहूदी शिक्षा की सच्चाई को पहचानता था क्योंकि यह पुराना नियम था।

फिर भी, चीजें एक मसीही दिशा में विकसित हो रही थीं, जिसने पुराने नियम को पूरा किया और स्पष्ट किया कि पुराना नियम किस बारे में था। यह एक परिवर्तनशील युग है और पहली सदी में यह बहुत कठिन समय है। जरा कल्पना करें, अगर आप एक ईसाई के रूप में एक पल के लिए कर सकते हैं।

यह पूरी तरह से काल्पनिक है। मान लीजिए कि भगवान दुनिया के साथ अपने व्यवहार के इतिहास में एक बड़ा बदलाव करना चाहते हैं। इसलिए, वह एक प्रतिनिधि भेजते हैं और हम कहेंगे कि यह प्रतिनिधि, सिर्फ हमारे उदाहरण के लिए, एक देवदूत है जो हमें बताएगा कि हमें इस नई दिशा में जाना है।

खैर, आप ऐसा करने के लिए कितने इच्छुक होंगे? मैं कहना चाहूँगा कि हममें से ज़्यादातर लोगों को ऐसा करने में मुश्किल होगी। खैर, इसके बारे में सोचिए। ये यहूदी हैं जिनके पास परमेश्वर का वचन है।

रोमियों 2 पढ़ें। उन्हें परमेश्वर का वचन मिला। सचमुच। और यहाँ ये देर से आए लोग, मसीह की इस घटना के संदेशवाहक हैं जो फिलिस्तीन में हुई थी।

वैसे, उस समय विश्व इतिहास के रडार पर यह एक छोटा सा बिंदु था। बाइबिल की कथा में यह जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही महत्वपूर्ण भी है। और वे आपको बता रहे हैं, आपको इसे बदलना होगा।

मैं कहना चाहूँगा कि आपकी पहली प्रतिक्रिया यह होगी कि आप अपनी गर्दन के पीछे बाल ऊपर उठाएँ, जैसे कि बिल्ली सोफ़े पर बैठी हो और कुत्ता सोफ़े पर कूद पड़े। खैर, इन यहूदी ईसाइयों ने ऐसा ही किया। और उन्हें अपनी गलतफ़हमियों के लिए दोषी ठहराया जाना चाहिए।

लेकिन मुझे लगता है कि जैसे-जैसे हम संस्कृति और समय में आगे बढ़ते हैं, हमें यह एहसास होना चाहिए कि यह एक वास्तविक दुनिया थी। ये लोग उन चीजों पर चर्चा कर रहे थे जिन्हें हम अब सामान्य मानते हैं। हमें इसके प्रति संवेदनशील होना चाहिए।

वे पॉल के अधिकार को चुनौती दे रहे थे। हम उसे प्रेरित पॉल के रूप में सोचते हैं। वे उसके बारे में सोचते थे, ओह, वह यहूदी जो ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गया।

हम इसके लिए खुश हैं। लेकिन वह हमारे पूरे धर्म को बदलने की कोशिश कर रहा है। खैर, यह एक बहुत ही अलग स्थिति थी, है न? तीमुथियुस की रिपोर्ट प्राप्त करने पर कि तीमुथियुस इससे निपट नहीं सकता, पॉल व्यक्तिगत रूप से मुद्दों से निपटने के लिए कुरिन्थ का एक संक्षिप्त दौरा करता है।

2 कुरिन्थियों 2 में उन्होंने इसे दर्दनाक यात्रा कहा है। वह स्थिति में बदलाव लाने और चीजों को ठीक करने के लिए वहाँ गया था। लेकिन पौलुस को चर्च के सामने अपमानित होना पड़ा, और उसे बहुत तकलीफ़ में इफिसुस लौटना पड़ा। यह एक अच्छी बैठक नहीं थी।

तो अब वह कुरिन्थियों को एक शक्तिशाली प्रतिवाद पत्र लिखता है, जिसका उल्लेख 2 कुरिन्थियों 2 और 7 में किया गया है। और इसे आंसू भरा या कठोर पत्र कहा जाता है, जो वास्तविक 3 कुरिन्थियों का पत्र है। तो एक और लेखन आता है। यह 3 कुरिन्थियों या तो खो गया है या शायद 2 कुरिन्थियों के कुछ हिस्सों में आंशिक रूप से संरक्षित है क्योंकि 2 कुरिन्थियों में इन सभी चीजों पर विचार किया गया है।

जब सब कुछ खत्म हो जाता है, तो पॉल उन्हें वापस लिखता है, और शायद वह अपने पत्रों को उस पत्र के भीतर संसाधनों के रूप में उपयोग करता है जो वह उन्हें वापस लिखता है, इसे उद्धृत करता है, और कहता है, ठीक है, अब हमने इसे ठीक कर लिया है। क्या हम सभी खुश नहीं हैं? श्लोक 11, या संख्या 11। 1 कुरिन्थियों 16 में उल्लिखित योजना के अनुसार, लेकिन अनुच्छेद 9 में उल्लिखित कुरिन्थ की मध्यवर्ती यात्रा के कारण कुछ देरी के बाद, पॉल इफिसुस को छोड़कर मकिदुनिया चला जाता है।

वह त्रोआस आता है। वह तीतुस को नहीं ढूँढ़ पाता, इसलिए वह तीतुस को रोकने के लिए मकिदुनिया जाता है और हर जगह घूमता है। नंबर 12 पर, वह तीतुस से मिलता है, जो उससे कहता है, हे पॉल, कुरिन्थ में विद्रोह खत्म हो गया है।

हालात नियंत्रण में हैं। हम आगे बढ़ रहे हैं। वाह, क्या यह अद्भुत नहीं है? पॉल राहत की सांस लेता है, और वह 2 कुरिन्थियों को लिखता है, जो हमारे लिए वास्तव में 4 कुरिन्थियों के समान है।

और 2 कुरिन्थियों एक ऐसी किताब है जिसे हम नहीं देखेंगे, लेकिन यह एक महान पुस्तक है। 2 कुरिन्थियों में पॉल की सबसे आत्मकथात्मक रचना है। वास्तव में, कई लोग 2 कुरिन्थियों के एक भाग को निकालते हैं और उसमें से पादरी सेवा पर एक पाठ्यक्रम बनाते हैं, क्योंकि यह बहुत ही पादरी सेवा है।

पॉल इस बात से बहुत खुश हैं कि सभी चीजें ठीक हो गई हैं। समस्याओं का समाधान हो गया है। हम फिर से ऑनलाइन हो गए हैं।

और 2 कुरिन्थियों में हम इस बारे में बहुत कुछ जानते हैं। देखिए, अगर आप 2 कुरिन्थियों को 1 कुरिन्थियों से अलग करके पढ़ते हैं, और इस तरह के मुद्दों और यात्राओं और पत्रों की सूची से जो लिखे जा रहे थे और जो लेन-देन कुरिन्थ और पॉल के बीच चल रहा था, तो आप 2 कुरिन्थियों की शक्ति खो देंगे। आपको बाइबल को उसके मूल संदर्भ में पढ़ना होगा।

इसलिए, वह 2 कुरिन्थियों, हमारे वास्तविक 4 कुरिन्थियों को या तो पूरी तरह से लिखता है या कुछ ऐसी चीजों का उपयोग करता है जो उसने पहले ही लिखी थीं। वह इसे एक साथ लाता है। पॉल इसके लिए ज़िम्मेदार है।

यह पत्र वह मकिदुनिया से तीतुस के माध्यम से, दो अन्य भाइयों के साथ, वापस कुरिन्थ को भेजता है। फिर, प्रेरितों के काम 20, पद 2 में। तो, हम प्रेरितों के काम 18-20 में हैं। 18-1 और 20-2 के बीच कितना समय बीता? काफी समय।

वर्षों। पौलुस और कुरिन्थ के बीच आदान-प्रदान के उन अंशों के बीच कई वर्ष हैं। प्रेरितों के काम 20-2 में पौलुस स्वयं कुरिन्थ पहुँचता है और उनके साथ अच्छी मुलाकात करता है।

तो, भाई, कुरिन्थ किसी भी अन्य भौगोलिक स्थान से कहीं बढ़कर है। यह इतना महत्वपूर्ण नहीं है कि पौलुस ने कुरिन्थ में कितना समय बिताया। हो सकता है कि उसने इफिसुस में ज़्यादा समय बिताया हो।

हालाँकि, पौलुस ने कितना समय बिताया, यह मुद्दा नहीं है। मुद्दा यह है कि उसने कुरिन्थ शहर के साथ कितना महत्वपूर्ण समय बिताया, और हमारे पास 1 और 2 कुरिन्थियों में इसका एक बड़ा रिकॉर्ड है। क्या हम इन पत्रों के लिए खुश नहीं हैं? हमें अपनी पूरी ऊर्जा के साथ उनमें डूब जाना चाहिए।

तो, यह हमारे पास है। पॉल और कुरिन्थ के चर्च के बीच का यह इतिहास। अब, मैंने पेज 40 पर आपके नोट्स में पॉल की मिशनरी यात्राओं को शामिल कर दिया है।

मैंने इसे अन्य साइटों से लिया है। मैंने इसे मूल रूप से खुद बनाने की कोशिश नहीं की। मैंने आपको एक वेबसाइट दी है जहाँ से मुझे यह मिला।

समय के संदर्भ में यह अभी भी मौजूद हो सकता है या नहीं भी हो सकता है। यह सामान्य, समान भाजक सामग्री है। यह बहुत अधिक व्याख्या के लिए खुला नहीं है।

यह इसलिए है ताकि आपको पॉल की यात्राओं और उनके दौरों के बारे में जानने में सुविधा हो। तीन मिशनरी यात्राएँ और फिर बाद में फिलिस्तीन से वापस रोम की उनकी यात्रा। मैं इसे आपके लिए सुविधाजनक बना दूँगा।

उम्मीद है कि आप पेज 40, 41 और 42 पर इसकी सराहना करेंगे, और इसे पेज 43 पर ले आएं। क्या आपको इस बात पर गर्व नहीं है कि हम कितने पेज कवर कर रहे हैं? ठीक है, तो

हमने कुरिन्थ में चर्च की स्थापना के बारे में बात की है। हमने कुरिन्थ के साथ पॉल के रिश्ते के कालक्रम और उनके बीच चल रही सभी बड़ी और दिलचस्प चीजों को देखा है।

और हम वापस आकर सवाल पूछते हैं, कोरिंथियन चर्च के रंग-रूप के बारे में क्या? एक बार फिर, गारलैंड के पास रोमन दृष्टिकोण से इस चर्च के रंग-रूप और प्रकृति पर एक बढ़िया खंड है। मैंने आपको यहाँ एक किराने की सूची दी है जिसे मैंने अभी निकाला है। यह सिर्फ एक नमूना है।

यहाँ प्रथम कुरिन्थियों के अंश हमें बताते हैं कि वहाँ बहुत अधिक वर्ग संघर्ष था। बहुत अधिक बौद्धिक अभिमान था, जो गलत आधार पर था। कुरिन्थ के चर्च में प्रभावशाली धर्मांतरित लोग थे।

कुछ लोग साधन संपन्न थे, और कुछ लोग औसत दर्जे के थे। हम इसे कई जगहों पर देख सकते हैं। समस्याएँ थीं: पार्टी भावना, नैतिक शिथिलता, और ईश्वर की बुद्धि के बजाय सांसारिक बुद्धि का अनुसरण करना।

अध्याय 6 में औपचारिक अनैतिकता को संबोधित किया गया था। सभी प्रकार की विभिन्न श्रेणियों के यौन मुद्दे थे। 1 कुरिन्थियों 7 कुरिन्थ के चर्च के भीतर कई उपसमूहों को देखता है जो कामुकता से जुड़ी समस्याओं से जूझ रहे थे। यह अपेक्षित होना चाहिए।

अगर आप ग्रीको-रोमन दुनिया से बाहर आते हैं, जहाँ, जैसा कि रोमन दुनिया में कहा जाता है, अगर एक महिला नियमित रूप से केवल दो पुरुषों को जानती है, तो वह असाधारण रूप से अच्छी है। कामुकता के मामले में यह एक व्यापक खुली दुनिया थी। अब, इसकी अपनी सीमाएँ थीं और औपचारिक विवाह और अन्य मामलों में बहुत सख्त सीमाएँ थीं।

लेकिन कानूनी पत्नी के अलावा भी कुछ ऐसे पहलू थे जहाँ सभी तरह की यौन चीजें हो रही थीं। इसलिए, जब आप यहूदी-ईसाई कामुकता की शिक्षा का सामना करते हैं, तो वे यौन समस्याओं में उलझे हुए थे। पहला कुरिन्थियों 12-14, एकता की कमी और प्रेम की कमी।

यह वह भाग है जहाँ आप उपहारों के बारे में बात करते हैं, लेकिन वास्तव में जो हो रहा है वह एकता और प्रेम की कमी है। 12-2, यहूदी उपस्थिति। पहला कुरिन्थियों 8 और 10, स्वतंत्रता की अवधारणाओं की गलतफ़हमियाँ जो कामुकता के मुद्दों से काफी हद तक संबंधित हैं।

लेकिन स्वतंत्र होने का मतलब पूरी तरह से स्वतंत्र होना नहीं है; इसका मतलब है नैतिक मानकों के एक नए सेट का पालन करने के लिए स्वतंत्र होना। तो, यह एक जटिल चर्च था। विहित कुरिन्थियन पत्रों की तिथियों, स्थानों और रचना के बारे में क्या? खैर, जैसा कि हमने उल्लेख किया है, पहला कुरिन्थियों को पॉल ने इफिसस में रहते हुए लिखा था।

यह संभवतः 54-55 ई. में हुआ था। इसके अलावा, और मैंने आपको इसके कुछ अन्य प्रमाण दिए हैं, आप इसे टिप्पणियों के परिचय में आसानी से देख सकते हैं। दूसरा कुरिन्थियों कुछ महीने बाद लिखा गया था।

1 कुरिन्थियों के बाद, शायद कहीं और, शायद मैसेडोनिया में फिलिप्पी। 55-56 में, सिर्फ़ कुछ महीने बाद, दूसरा कुरिन्थियों आता है, शायद एक साल तक। 2 कुरिन्थियों की प्रामाणिकता और रचना के मुद्दों पर ज़्यादा बहस होती है।

1 कुरिन्थियों पर बहस नहीं की जाती है, लेकिन आपको इससे निपटने के लिए परिचय पढ़ना होगा और दूसरे कुरिन्थियों पर औपचारिक अध्ययन करना होगा। अब, दो पत्रों की कुछ आवश्यक विशेषताएँ। ये बहुत अलग-अलग पत्र हैं, 1 कुरिन्थियों और 2 कुरिन्थियों।

प्रथम कुरिन्थियों में मुद्दों की एकता और एकता की आवश्यकता पर विचार किया गया है। आप प्रथम कुरिन्थियों में ऐसे कई अवसर पाएंगे जहाँ पार्टी भावना है। मैं पॉल का हूँ, मैं अपोलो का हूँ।

प्रभु भोज एक गड़बड़ है। आपके पास ऐसे लोग हैं जो रोटी और प्याले के साथ-साथ भोजन का भी अभ्यास करते हैं। और आपको 1 कुरिन्थियों 11 में सभी प्रकार की समस्याएँ मिलती हैं।

आध्यात्मिक उपहार समस्याओं के मामले में नक्शे से बाहर हैं - व्यक्तिवाद, जो उस संस्कृति का एक हिस्सा था। व्यक्तिगत स्वतंत्रता चर्च के सामुदायिक मुद्दों के साथ खिलवाड़ कर रही थी।

और फिर यह वाक्यांश जो मैंने आपको यहाँ पृष्ठ 44 पर दिया है। पृष्ठ 44 प्रथम कुरिन्थियों के अंतर्गत। एकता एकरूपता नहीं है।

एकरूपता : मैं इस बात पर ज़ोर देना चाहता हूँ। एकता का मतलब एकरूपता नहीं है। एकता का मतलब विविधता की सराहना है।

मैं इसे पर्याप्त रूप से दृढ़ता से नहीं कह सकता। पॉल ने इसे पहले कुरिन्थियों में कई तरीकों से और कई बार कहा है। एकता एकरूपता नहीं है।

एकता का मतलब है विविधता का आनंद लेना और उसकी सराहना करना। अगर आप मंत्रालय के नेता हैं, तो आपको यह सीखना चाहिए। मंत्रालय के नेतृत्व का मतलब यह नहीं है कि आप अपने सभी छोटे-छोटे कामों को अपने पीछे लगा दें।

वास्तव में, यदि आप ऐसा करने की कोशिश करते हैं, तो आप सेवकाई में बहुत अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाएँगे। एकता का मतलब लोगों को एक ढाँचे में ढालना नहीं है। इसलिए मैं पॉल और अपोलो की मानसिकता का हूँ।

एकता का मतलब है कि आप जिन लोगों की सेवा करते हैं, उनकी विविधता को अपने साथ ले सकें। और उनके साथ काम कर सकें। और अगर आप चाहें तो उन्हें एक मशीन में ढाल सकें, यह प्रभावी है।

विविधता के साथ, इसके बावजूद नहीं। वह इसे दबा नहीं रहे हैं।

लेकिन उस विविधता को सुसमाचार के लिए प्रभावी तरीके से काम में लाना। ऐसा करना आसान नहीं है। हम सभी का व्यक्तित्व अलग-अलग होता है।

विभिन्न प्रकार के पादरी और सेवकाई नेता इस व्यक्ति को उस व्यक्ति से अधिक पसंद करने से मुक्त नहीं हैं, इस व्यक्ति के साथ अपनी पहचान को उस व्यक्ति से अधिक पहचानने से मुक्त नहीं हैं। यह मानव स्वभाव है।

और हमें इसे स्वीकार करना चाहिए, इसे स्वीकार करना चाहिए और इसे नकारने के बजाय इससे निपटना चाहिए। हमारे मानवीय रिश्तों में इनकार बहुत गहरा है। ऐसे बहुत से लोग हैं जिनके साथ मैं ज़्यादा समय बिताना पसंद नहीं करता।

ऐसा नहीं है कि वे बुरे लोग हैं। वे मुझसे बेहतर हो सकते हैं। लेकिन वे मेरे साथ नहीं जुड़ पाते और मैं उनके साथ नहीं जुड़ पाता। और यह शब्द पर कोई जुड़ाव स्थापित नहीं कर रहा है।

लेकिन यह इस तथ्य को पहचानने में सक्षम होना है कि हर इंसान किसी न किसी तरह से आकर्षित होता है... शायद हम कह सकते हैं कि ऐसे लोग जो हमारे जैसे हैं, लेकिन मुझे लगता है कि कभी-कभी ये ऐसे लोग होते हैं जो हमें नापसंद करते हैं। ताकि हम उस देने और लेने का आनंद ले सकें। लेकिन हमें इसके प्रति सचेत रहना होगा।

हमें यह जानना होगा कि हम अपनी दुनिया में कैसे काम करते हैं। हमें आत्म-चेतना का एक अच्छा स्तर रखना होगा। ताकि हम कह सकें, आप जानते हैं, यह व्यक्ति मुझे बहुत पसंद नहीं है, लेकिन मैं उसके साथ अधिक समय बिताना चाहता हूँ।

वास्तव में, नेतृत्व के कुछ धर्मनिरपेक्ष सिद्धांत भी हैं... यह है कि आप उन लोगों को अपने करीब लाते हैं जो समस्या बन सकते हैं, न कि उन्हें दूर धकेलते हैं। और शायद मंत्रालय कभी-कभी बहुत हद तक ऐसा ही होता है। वास्तव में, मुझे लगता है कि हमें अपने मंत्रालय और अपने ईसाई समुदायों में इस तरह का खुला और ईमानदार संचार रखना चाहिए।

हर कोई एक दूसरे को जानता है। यह एक परिवार में होने जैसा है। हम अक्सर चर्च की उस कल्पना का उपयोग करते हैं, लेकिन यह शायद ही कभी सच होता है।

अगर आप किसी परिवार में हैं, तो आप जानते हैं कि फलां चाचा किस तरह के हैं। और आप जानते हैं कि फलां चचेरा भाई किस तरह का है। उनमें से कुछ मज़ेदार होते हैं, और उनमें से कुछ परिवार के लिए शर्मनाक होते हैं।

लेकिन आखिरकार, वे अभी भी परिवार ही हैं। और हम उनके साथ खुश रह सकते हैं, जैसे वे हमारे हैं। हमें इस तरह का माहौल बनाने की कोशिश करनी होगी।

विविधता को स्वीकार करने का माहौल, न कि उसे अस्वीकार करने का माहौल। कोरिंथियन विविधतापूर्ण था। और उस विविधता ने समस्याएँ पैदा कीं क्योंकि मानव स्वभाव ने इसके खिलाफ़ आवाज़ उठाई।

विविधता में क्या सच और शक्तिशाली है, यह खोजने के बजाय। अब, यह एक निश्चित नैतिक छत्र के नीचे एक विविधता है। यह कोई जंगली विविधता नहीं है।

उदाहरण के लिए, यह विविधता नैतिक सत्य की अनदेखी नहीं करती। यह एक प्रलोभन है जिसका सामना हम इन दिनों अपनी दुनिया में कर रहे हैं। लेकिन यह व्यक्तित्व की विविधता है, खास तौर पर।

हमें इसे स्वीकार करना और इससे निपटना सीखना होगा। इसकी सराहना करनी होगी। और फिर भी, शायद हम ऐसा नहीं कर सकते।

इसके बारे में ईमानदार रहें। किसी और के सामने अपने आपको प्रभावित न होने दें और न ही उन्हें अपने सामने अपने प्रभाव का इस्तेमाल करने दें। इसे सबके सामने रखें।

इसके बारे में बात करें। इससे निपटें। अगर आप ऐसा करेंगे तो चीजें बहुत बेहतर होंगी।

1 कुरिन्थियों में मुख्य शब्द। जानना, न्याय करना, पहचानना, आत्मा, आध्यात्मिक, ज्ञान, बुद्धि, चर्च, दुनिया, शक्ति या अधिकार, पवित्र, पवित्र। 1 कुरिन्थियों में व्यक्तिगत जोर दिया गया है।

व्यक्तिगत सर्वनाम आप की 146 बार उपस्थिति। क्योंकि पॉल था... हमारे और उनके बीच कोई द्वंद्व नहीं था। लेकिन पॉल और उसका समुदाय था।

और आप कुरिन्थ के भीतर कुछ उपसमूहों में थे जिनसे निपटना था। अगर आप चाहें तो अच्छे और बुरे दोनों तरह के लोग थे। लेकिन यह बहुत बड़ा है।

बहुत ही व्यक्तिगत। उदाहरण के लिए, यदि आप इसकी तुलना 2 कुरिन्थियों से करें। हमने अभी मुख्य शब्दों पर काम किया है।

2 कुरिन्थियों के अध्याय 44 के नीचे दिए गए मुख्य शब्दों पर गौर करें। कमजोरी, क्लेश, सांत्वना, घमंड, सेवकाई, महिमा। ये भावनात्मक शब्द हैं।

1 कुरिन्थियों में प्रयुक्त शब्द भावनात्मक नहीं हैं, बल्कि अधिक तर्कसंगत हैं। वे बहुत अलग हैं। 2 कुरिन्थियों में पौलुस के हृदय की बात प्रकट होती है।

यही कारण है कि यह इतनी देहाती है। यह एक ऐसी किताब है जिसे बहुत उपेक्षित किया गया है, लेकिन एक ऐसी किताब है जिसे हमें गहराई से जानने की बहुत ज़रूरत है। तो, कोरिन्थियन पत्रों की आवश्यक विशेषताएँ।

आप उन पर विचार कर सकते हैं। आप अन्य स्थानों पर परिचय में कई आवश्यक विशेषताओं के बारे में पढ़ेंगे। और आप उन्हें स्वयं भी सामने ला सकते हैं।

शायद आप अपनी खुद की सूची बनाना चाहेंगे। जैसे-जैसे आप कुरिन्थियों की पुस्तक पर काम करते हैं, आप लगातार सूची भर सकते हैं। जैसे-जैसे आप आगे बढ़ते हैं।

सावधान रहें। यात्रा का आनंद लें। शुक्र है कि मैं ये व्याख्यान थोड़े संक्षिप्त रूप में दे रहा हूँ।

आपको वहाँ बैठकर मेरी बातें सुनने की इतनी देर तक ज़रूरत नहीं पड़ेगी। मैं यहाँ पेज 44 पर रुकने जा रहा हूँ। जैसे ही हम 1 कुरिन्थियों के वास्तविक पाठ में प्रवेश करते हैं,

मैं 1 कुरिन्थियों की पुस्तक की संरचना के संरचनात्मक मुद्दों पर बात करना चाहता हूँ। मैंने इसे पुस्तक के पाठ में आगे बढ़ने के दौरान भी बनाए रखा। इसलिए, मैं यहाँ रुकता हूँ।

और आपसे अनुरोध है कि आप अपना होमवर्क अवश्य करें। और उन सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक मुद्दों के बारे में खुद को शिक्षित करें जो पहली शताब्दी में पॉल और उसके श्रोताओं के लिए जीवंत थे। और जब आप ऐसा करेंगे, तो आप इस पुस्तक को बेहतर ढंग से पढ़ पाएंगे।

आप बारीकियों को महसूस करेंगे। आप सिर्फ़ शब्द ही नहीं सुनेंगे। बल्कि ऐसा लगेगा जैसे आप पॉल और उसके श्रोताओं के बीच में बैठे हैं।

और जो कुछ हो रहा है उसे सुनना और महसूस करना। भगवान आपको आशीर्वाद दें।

यह डॉ. गैरी मीडर्स द्वारा 1 कुरिन्थियों की पुस्तक पर दी गई शिक्षा है। यह व्याख्यान 7, 1 कुरिन्थियों का परिचय, भाग 2 है।